अक्टूबर क्रांतिः मानवता के लिए नयी राह

महान अक्टूबर क्रांति, एक शोषण मुक्त समाज के निर्माण के रास्ते पर मानव इतिहास का पहला कदम थी। यह एक नये समाजवादी समाज की स्थापना के लिए मजदूरों, किसानों तथा अन्य शोषित तबकों की पहली सफल क्रांति थी।

अक्टूबर क्रांति कैसी क्रांति थी ?

1917 में रूस में हुई अक्टूबर क्रांति विश्व इतिहास के एक युग की द्योतक थी। इस क्रांति के फलस्वरूप एक नये समाजवादी राज्य की स्थापना हुई थी--सोवियत संघ। इस क्रांति के साथ, मजदूर वर्ग के नेतृत्व में क्रांतिकारी आंदोलन, विश्व परिदृश्य पर आ गया।

रूसी क्रांति 7 नवंबर 1917 को हुई थी। पुराने रूसी कलैंडर के अनुसार, यह तारीख 25 अक्टूबर की थी।

उस जमाने में रूस जारशाही राजतंत्र का केंद्र था। जारशाही का विशाल साम्राज्य था जो समूचे मध्य एशिया तक फैला हुआ था। जारशाही व्यवस्था की पहचान बड़ी जमींदारियों से होती थी। अंतिम जार की मिल्कियत में इस साम्राज्य की बेहतरीन 80 लाख हैक्टेयर जमीन थी। 28 हजार बड़े जमींदार थे, जिनका 16 करोड़ 74 लाख एकड़ जमीन पर मालिकाना अधिकार था।

इस अर्द्ध-सामंती भूस्वामित्व के साथ ही साथ, पूंजीवादी विकास के चलते औद्योगिक तथा खनन के क्षेत्रों में इजारेदारियों का उदय हुआ था। हालांकि वहां पूंजीवाद का तेजी से विकास हो रहा था, फिर भी पूंजीवादी विकास के मामले में रूस, बड़े योरपीय देशों के मुकाबले पिछड़ा हुआ था।

1914 में जार पहले विश्व युद्ध में शामिल हो गया। यह एक साम्राज्यवादी युद्ध था जो उपनिवेशों तथा संसाधनों पर नियंत्रण पाने के लिए जर्मनी, ब्रिटेन, फ्रांस तथा रूस जैसी साम्राज्यवादी ताकतों के बीच फूट पड़ा था।

दसियों लाख किसानों तथा मजदूरों को जारशाही की फौज में भर्ती कर लिया गया और लड़ने के लिए लाम पर भेज दिया गया। इस युद्ध में, जिसमें रूसी पक्ष की जर्मनी के हाथों हार हो रही थी, दसियों हजार लोग मारे गए थे। उधर कंगाल बना दिए गए किसान, भूदासों की तरह, जमींदारों के कोड़े के नीचे तड़प रहे थे।

पहले आयी फरवरी क्रांति

इन हालात में जन असंतोष भड़क उठा और क्रांतिकारी ताकतों तथा खासतौर पर बोल्शेविक पार्टी ने जारशाही निजाम के खिलाफ बगावत छेड़ दी। इस जन-उभार ने एक क्रांति का रूप ले लिया, जो 1917 के फरवरी के महीने में संपन्न हुई। जारशाही की निरंकुश सत्ता को उखाड़ फैंका गया और उसकी जगह पर एक पूंजीवादी बोलबाले वाली सरकार बैठा दी गयी, जिसमें कुछ सोशल डैमोक्रेटिक पार्टियां भी शामिल हो गयीं। फरवरी क्रांति के बाद बनी इस अस्थायी सरकार ने प्रतिक्रियावादी ताकतों के साथ समझौता करने की और रूसी पूंजीपति वर्ग के हितों को आगे बढ़ाने

की कोशिश की। युद्ध में लगे धक्कों और थोक के हिसाब से सैनिकों के हताहत होने के चलते, यह सरकार बढ़ते पैमाने पर अलोकप्रिय होती गयी।

फरवरी क्रांति ने लोक सत्ता के एक नये औजार को मंच पर ला दिया था--सोवियतें। फरवरी क्रांति के बाद, सभी प्रमुख शहरों में और देहात में मजदूरों, सैनिकों तथा किसानों की सोवियतें उभरकर सामने आ गयीं।

बोल्शेविक पार्टी को (जो क्रांति के बाद क युनिस्ट पार्टी बन गयी) मजदूरों की सोवियतों और फौजी दस्तों में गठित होने वाली सोवियतों के बीच, बढ़ता हुआ समर्थन हासिल हो रहा था। सितंबर के अंत तक आते-आते अस्थायी सरकार के शासन को मजदूरों, किसानों तथा सैनिकों के बढ़ते विद्रोह का सामना करना पड़ रहा था। राजधानी पैट्रोग्राड में और मास्को जैसे शहरों में सर्वहारा ने अपने ही सोवियतों का तथा सशस्त्र दस्तों का गठन कर लिया था ताकि लगातार जारी क्रांति की हिफाजत कर सकें। तमाम ग्रामीण रूस में किसानों तथा खेत मजदूरों ने जमींदारों तथा कुलीनतंत्र की जमीनों पर कब्जा करना शुरू कर दिया था। सेना के जवानों ने अपनी सोवियतें चुन ली थीं और वे युद्ध खत्म करने तथा शांति स्थापित करने की पुकार कर रहे थे। लेनिन ने ध्यान दिलाया था कि ज्यादातर सैनिक तो, ''वर्दीधारी किसान'' थे।

अक्टूबर क्रांति की ओर: सारी सत्ता सोवियतों के हाथों में

इन्हीं हालात में, बोल्शेविक पार्टी के नेता, लेनिन ने एलान किया था कि देश, पूंजीवादी क्रांति के पहले चरण से, उसके दूसरे चरण में प्रवेश कर रहा है, जिसमें सत्ता सर्वहारा वर्ग के और किसानों के सबसे गरीब तबकों के हाथों में होनी चाहिए।

अंतत: ''सारी सत्ता सोवियतों के हाथों में'' के आह्वान के साथ, 25 अक्टूबर (7 नवंबर) को, मजदूरों के सशस्त्र दस्तों (रैड गार्ड) और सेना के क्रांतिकारी सिपाहियों ने, अस्थायी सरकार को हटाने के लिए कार्रवाई की। राजधानी पैट्रोग्राड अपने हाथों में लेने में क्रांति सफल रही। अगले सप्ताहों में, मास्को में तथा अन्य सभी केंद्रों में, पुराने निजाम के प्रति वफादारी बनाए रही प्रतिक्रांतिकारी सेनाओं के प्रतिरोध पर काबू पाने के बाद, समूचे रूस में और पुराने जारशाही साम्राज्य के अन्य हिस्सों में सोवियत सत्ता कायम हो गयी।

क्रांति के फलस्वरूप लेनिन के नेतृत्व में, जन कमिसारों की परिषद के साथ, एक नयी सरकार कायम हुई।

बोल्शेविकों ने भूमि , शांति तथा रोटी के नारे पर जनता को गोलबंद किया था। नयी सरकार ने जो पहला ही कदम उठाया, वह था मजदूरों, सैनिकों तथा किसान प्रतिनिधियों की सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस के सामने भूमि पर आज्ञाप्ति और शांति पर आज्ञाप्ति का लाया जाना। भूमि पर जो आज्ञाप्ति स्वीकार की गयी उसके जरिए तमाम जागीरों का और चर्च व मोनेस्ट्रियों की तमाम जमीनों का, उनके मवेशियों, औजारों तथा इमारतों के साथ अधिग्रहण कर लिया गया और उन्हें स्थानीय भूमि कमेटियों तथा किसान प्रतिनिधियों की जिला सोवियतों को सौंप दिया गया।

शांति की आज्ञाप्ति में एलान किया गया कि युद्ध समाप्त हो और फौरन युद्ध में लगी सभी सरकारों तथा जनगणों के साथ शांति वार्ताएं हों। नयी सोवियत सरकार ने एलान किया कि वह फौरन, दूसरे के इलाके हड़पे बिना और हर्जाने के बिना, शांति संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए संकल्पबद्ध है।

अन्य आज्ञाप्तियों के विषय थे--निरक्षरता का अंत, सार्वभौम प्राथमिक शिक्षा, मु त स्वास्थ्य रक्षा का प्रावधान और एक नये, सोवियत समाजवादी गणराज्यों के संघ (यूएसएसआर) का गठन।

जारशाही का रूस, ''जातीयताओं का कैदखाना'' था। रूसी क्रांति ने विभिन्न गैर-रूसी जातीयताओं को औपनिवेशिक जुए से मुक्त कराया था और उन्हें, इस संघ के अंदर सोवियत गणराज्यों के रूप में एक स्वायत्त ढांचा मुहैया कराया था।

बहरहाल, नव गठित सोवियत राज्य समाजवाद के निर्माण के रास्ते पर चलना शुरू कर पाता, उससे पहले ही उसे प्रतिक्रांतिकारी ताकतों के हमले का सामना करना पड़ा। बहुत ही तीखा गृहयुद्ध फूट पड़ा और लाल सेना को व्हाइट गार्डों और प्रतिक्रांतिकारी ताकतों के खिलाफ लड़ना पड़ा। ब्रिटेन, जर्मनी तथा फ्रांस समेत, दस पूंजीवादी देश इन प्रतिक्रांतिकारी ताकतों को समर्थन दे रहे थे और उन्हें मदद दे रहे थे तथा हथियार दे रहे थे।

गृहयुद्ध के चार साल बाद, लाल सेना आखिरकार विजयी हुई और उसने प्रतिक्रियावादी ताकतों को कुचल दिया। इस प्रक्रिया में उसे भी भारी कीमत चुकानी पड़ी। दसियों हजार वर्ग चेतस मजदूरों को तथा किसानों को लाल सेना में अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ी।

इसे दुनिया की पहली समाजवादी क्रांति क्यों कहते हैं?

अक्टूबर क्रांति, इससे पहले तक दुनिया में हुई सभी क्रांतियों से अलग थी। 1789 की फ्रांसीसी क्रांति से लगाकर, ऐसी अनेक क्रांतियां इससे पहले हुई थीं, जो पुराने सामंती वर्गो तथा कुलीनों से, पूंजीपति वर्ग द्वारा सत्ता छीने जाने को दिखाती थीं।

अतीत में इतिहास के विभिन्न चरणों में क्रांतियां होती आयी थीं, जिनमें शासकों के नये उदीयमान वर्गों द्वारा पुराने शोषणकारी वर्गों के शासन को उलटा जाता रहा था। पूजीपति वर्ग के नेतृत्व वाली क्रांतियों के जरिए, पुराने सामंती शोषक वर्गों को उखाड़ फैंके जाने के प्रकरणों में ऐसा ही हुआ था।

अक्टूबर क्रांति इनसे भिन्न थी। यह पहला ही मौका था जब मजदूर वर्ग और गरीब किसानों जैसे उसके सहयोगी, जोकि शोषित वर्ग में आते थे, सत्ताधारी पूंजीपति तथा शोषक वर्गों के राज को पलटने के लिए क्रांति का नेतृत्व कर रहे थे।

रूस में क्रांति पर मजदूर वर्ग के नेतृत्व के चलते ही अक्टूबर क्रांति को दुनिया की पहली समाजवादी क्रांति की पहचान मिली। लेनिन ने कहा था कि क्रांति को सफल तभी माना जाएगा, जब पुरानी राजसत्ता को ध्वस्त कर दिया जाए और एक नये ढंग की राजसत्ता कायम हो जाए। रूसी क्रांति में यही हुआ था। इस क्रांति में पुरानी राजसत्ता को ध्वस्त कर दिया गया था और उसकी जगह पर सोवियतों के रूप में एक नये राज्य को कायम किया गया था, जो मजदूरों तथा गरीब किसानों के हितों का प्रतिनिधित्व करता था।

समाजवाद का तकाजा था कि उत्पादन के साधनों का समाजीकरण हो। नयी राजसत्ता के गठन के साथ इसे हासिल किया गया। उद्योग, भूमि, खेती तथा उत्पादन के अन्य साधनों का राज्य ने अधिग्रहण कर लिया और वे सामूहिक मिल्कियत बन गए।

दुनिया में यह पहला ही मौका था जब एक नयी समाजवादी उत्पादन पद्धति कायम हुई थी।

क्रांति की उपलब्धियां

1960 के दशक तक सोवियत संघ में उल्लेखनीय आर्थिक वृद्धि हो रही थी। इस सचाई को तो उसके कटु से कटु आलोचकों तक को स्वीकार करना पड़ा था। प्रतिष्ठित ब्रिटिश आर्थिक इतिहासकार, अंगुस मेडिसन ने दर्ज किया था कि, ''1913 से 1965 के बीच, प्रतिव्यक्ति सोवियत आर्थिक वृद्धि दर दुनिया भर में, तमाम विकसित या विकासशील देशों में, सबसे तेज रही थी--जापान की दर से भी तेज। जापानी उत्पाद में 400 फीसद की बढ़ोतरी हुई थी, सोवियत उत्पाद में 440 फीसद की।''

0 गृह युद्ध के खत्म होने के बाद एक दशक में निरक्षरता को मिटा दिया गया।

0 सार्वभौम प्राथमिक शिक्षा और उसके बाद, सात वर्ष की सार्वभौम शिक्षा तथा सार्वभौम सैकेंडरी (दसवीं तक) शिक्षा का प्रावधान, जो तब तक योरप का और कोई भी देश हासिल नहीं कर पाया था।

0 भूस्वामित्व का खात्मा और सामूहिक फार्मों तथा सहकारिताओं में गरीब किसानों तथा खेत मजदूरों को अधिकार दिया जाना।

0 क्रांति के फौरन बाद, सभी नागरिकों के लिए मु त स्वास्थ्य रक्षा की व्यवस्था शुरू की गयी।

0 सब के लिए रोजगार और बेरोजगारी का अंत। 1936 तक सभी रोजगार द तर बंद हो चुके थे क्योंकि पूर्ण रोजगार की स्थिति हासिल की जा चुकी थी।

0 नयी सरकार के पहले ही फैसलों में से एक फैसला महिलाओं के लिए समान अधिकार, समान मजदूरी, मातृत्व लाभ का अधिकार और तलाक का अधिकार सुनिश्चित करना था। क्रांति ने ही महिलाओं को मताधिकार दे दिया था। ब्रिटेन में 1928 में ही महिलाओं को यह अधिकार दिया जा सका था।

0 जनता को उपलब्ध सांस्कृति संसाधनों का भारी विस्तार हुआ था। सरकारी धन से पुस्तकों के प्रकाशन से लेकर, फिल्मों, संगीत तथा कला के सांस्कृतिक उत्पादनों तक।

अक्टूबर क्रांति का ऐतिहासिक असर

1917 से पहले की दुनिया, उसके एक सदी बाद आज जैसी है उससे बहुत ही भिन्न थी। 20वीं सदी के आरंभ तक का दौर साम्राज्यों का दौर था, जहां साम्राज्यवाद अपने शिखर पर था। ब्रिटिश, जर्मन, फ्रांसीसी, आस्ट्रो-हंगेरियाई, रूसी तथा जापानी साम्राज्य दुनिया पर हावी थे और उनके बीच दुनिया बंटी हुई थी। इसके अलावा अपेक्षाकृत छोटे साम्राज्य भी थे, जैसे इतालवी, पुर्तगाली, आदि। दुनिया की आबादी का बड़ा हिस्सा इन्हीं साम्राज्यों के आधीन उपनिवेशों या अर्द्ध-उपनिवेशों में रहता था।

रूसी क्रांति ने इस पुराने ढ़ंग के उपनिवेशवाद के अंत की शुरूआत की। इसकी मौत की हिचकियां तो पहले विश्व युद्ध के साथ ही शुरू हो गयी थीं, जो अक्टूबर क्रांति से पहले हुआ था। जारशाही के उखाड़ फैंके जाने के पचास साल के अंदर-अंदर, दुनिया के नक्शे पर ऐसा शायद ही कोई साम्राज्य बचा था।

अक्टूबर क्रांति ने राष्ट्रीय मुक्ति संघर्षों की लड़ी में आग लगा दी थी, जिसने औपनिवेशिक शासन को उखाड़ फैंका। पहली समाजवादी क्रांति की सफलता के साथ, साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष कहीं उच्चतर स्तर पर पहुंच गया। एशिया, अफ्रीका तथा लातीनी अमरीका में राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों ने रूसी क्रांति से प्रेरणा हासिल की थी और सोवियत संघ ने राष्ट्रीय मुक्ति संघर्षों को अपना समर्थन दिया था।

अक्टूबर क्रांति, मजदूर–किसान गठबंधन की क्रांतिकारी रणनीति पर आधारित थी। मजदूर–किसान गठबंधन की इसी रणनीति को आगे चलकर औपनिवेशिक तथा अर्द्ध–औपनिवेशिक देशों में, किसानों की विशाल सं या को गोलबंद करने के लिए आजमाया गया था। अक्टूबर क्रांति के पदचिन्हों पर चलते हुए, तीन दशक के बाद, चीन की क युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में युगनिर्माणकारी चीनी क्रांति हुई। इसके बाद वियतनाम तथा कोरिया में क्रांतियां हुईं। ये सभी क्रांतियां 1930 के दशक में विकसित हुए विश्वव्यापी साम्राज्यवादविरोधी तथा फासीवादविरोधी संघर्षों की सीधे–सीधे उत्तराधिकारी थीं। यह प्रक्रिया दूसरे विश्व युद्ध के बाद के दौर में राष्ट्रों के एक समाजवादी गुट के गठन में अपने उत्कर्ष पर पहुंची।

20वीं सदी में मानवता के सामने आयी सबसे बड़ी बुराई, फासीवाद को अगर शिकस्त दी जा सकी थी, तो यह मु यत: समाजवाद की मौजूदगी तथा सोवियत संघ द्वारा चलाए गए संघर्ष के चलते ही संभव हुआ था। फासीवाद के विरुद्ध जन–युद्ध में सोवियत संघ के 2 करोड़ से ज्यादा सैनिकों तथा नागरिकों ने अपने प्राणों की आहुति दी थी। लाल सेना ने ही नाजी युद्ध मशीन को ध्वस्त करने की अगुआई की थी।

अक्टूबर क्रांति की मुक्तिदायी अंतर्वस्तु का सारी दुनिया पर असर पड़ा था। रूसी क्रांति की सफलता ने मजदूर वर्ग के क्रांतिकारी आंदोलनों को उत्प्रेरित किया था। सोवियत संघ में उठाए गए समाजवादी कदमों के प्रभाव ने दूसरे विश्व युद्ध के बाद पश्चिमी योरप की पूंजीवादी सरकारों को एक कल्याणकारी राज्य का मॉडल अपनाने के लिए मजबूर किया था। इन देशों में मजदूर वर्ग के संघर्ष, सार्वभौम शिक्षा तथा स्वास्थ्य रक्षा शुरू किए जाने की ओर ले गए थे।

भारत पर प्रभाव

अक्टूबर क्रांति की खबर का, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के भीतर के और उसके बाहर क्रांतिकारी ग्रुपों के भी, स्वतंत्रता सेनानियों पर, जोश दिलाने वाला असर पड़ा था।

1. कांग्रेस के गरमपंथियों (रैडीकल पक्ष) ने, जो बाल गंगाधर तिलक, बिपिनचंद्र पाल, लाला लाजपत राय, सी आर दास आदि नरमपंथियों से असंतुष्ट थे, रूस में क्रांतिकारी सफलता का स्वागत किया था और वे मजदूर वर्ग को संगठित करने के पक्ष में थे।
2. रूसी क्रांति के असर से भारत में मजदूर वर्ग के संगठित आंदोलन की शुरूआत हुई। 1918 से पहले तक, औद्योगिक मजदूरों को संगठित करने का कोई गंभीर प्रयास नहीं हुआ था। कभी–कभार हड़तालें हो जाती थीं। 1918 में मजदूर वर्ग के आंदोलन की शुरूआत हुई तथा मजदूर वर्ग के संगठनों की लहर उठी और 1919 से 1921 के बीच देश ने कई हड़तालें देखीं।

3. रूसी क्रांति के बारे में जानने के लिए मुहाजिर ग्रुप अफगानिस्तान के रास्ते रूस के लिए पहुंचे। ये ऐसे स्वतंत्रता सेनानी थे, जो खिलाफत आंदोलन के परिणामों से असंतुष्ट थे। उनमें से कुछ पहले भारतीय क युनिस्ट बने।

4. सुब्रमण्यम भारती, काजी नजरुल इस्लाम तथा रवींद्रनाथ टैगोर जैसे जाने–माने लेखकों तथा कवियों ने रूस में क्रांति की खबर का स्वागत किया था। अक्टूबर क्रांति के चंद ह ते बाद ही रवींद्रनाथ टैगोर ने एक गीत लिखा था––'नया रूस'। रवींद्रनाथ टैगोर ने 1930 में रूस की यात्रा की थी। वहां बन रहे नये समाज से प्रभावित होकर उन्होंने 'रूस से खतूत' में लिखा था:

''अगर मैंने खुद अपनी आंखों से नहीं देखा होता तो मैं कभी इस पर विश्वास नहीं कर सकता था कि सिर्फ दस साल में उन्होंने न सिर्फ लाखों लोगों को अज्ञान तथा अधोगति के अंधेरे से बाहर निकाला है और उन्हें लिखना–पढ़ना सिखाया है बल्कि उनमें मानव गरिमा की भावना को पाला–पोसा है। हमें खासतौर पर शिक्षा के संगठन का अध्ययन करने के लिए ही यहां आना चाहिए।''

जवाहरलाल नेहरू से लेकर पेरियार रामास्वामी तक, 1930 के दशक में जिन लोगों ने भी सोवियत संघ की यात्रा की थी, समाजवादी सोवियत संघ की उपलब्धियों से गहराई से प्रभावित हुए थे।

भगत सिंह तथा उनके कामरेडों ने, रूसी क्रांति तथा लेनिन ने प्रेरित होकर, समाजवाद को गले लगाया था। भगतसिंह तथा उनके साथियों ने, 21 जनवरी 1930 को जब उन पर मुकद्दमा चल रहा था, अदालत के कक्ष से मास्को के लिए निम्नलिखित तार भेजा था:

''लेनिन दिवस पर हम उन सब के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करते हैं, जो महान लेनिन के विचारों को आगे ले जाने के लिए कुछ कर रहे हैं। रूस जो महान समाजवादी तजुर्बा कर रहा है, हम उसकी सफलता की कामना करते हैं। हम मजदूर वर्ग के अंतर्राष्ट्रीय आंदोलन की आवाज के साथ अपनी आवाज मिलाते हैं।''

इस तरह, भारत में स्वतंत्रता तथा सामाजिक मुक्ति के लिए संघर्ष पर, रूसी क्रांति का गहरा असर पड़ा था।

सोवियत संघ का पराभव कैसे हुआ ?

रूसी क्रांति के बाद, पूंजीवादी घेरेबंदी तथा खून–खराबे भरे गृहयुद्ध के बीच सोवियत संघ की स्थापना हुई थी। नवगठित समाजवादी राज्य को लगातार साम्राज्यवादियों से खतरे का सामना करना पड़ रहा था और वह फासीवादी हमले का भी निशाना बना था। इन तमाम मुश्किलों पर काबू पाते हुए सोवियत संघ ने एक नयी राह रौशन की थी और युद्धोत्तर दौर में एक बड़ी ताकत बनकर उभरा था, जो सिर्फ अमरीका से पीछे थी। तेज र तार आर्थिक प्रगति, बेरोजगारी का अंत, सार्वभौम शिक्षा, स्वास्थ्य रक्षा व आवास का प्रावधान, जनता के भौतिक व सांस्कृतिक जीवन के स्तर का ऊपर उठना; यह सब समाजवादी समाज व्यवस्था में अंतर्निहित संभावनाओं को दिखाता था।

फिर भी वक्त गुजरने के साथ और खासतौर पर सोवियत संघ के अस्तित्व के आखिरी दो दशकों में, कुछ खामियों व त्रुटियों को पनपने का मौका मिला था। आर्थिक ढांचे में सुधार नहीं हुए, जिनसे नयी वैज्ञानिक व प्रौद्योगिकीय क्रांति का उपयोग किया जा सकता; अर्थव्यवस्था के प्रबंधन को नये तरीके से ढालने में विफल रहे; जनता की भौतिक प्रगति से कदम से कदम मिलाकर चलने के लिए समाजवादी जनतंत्र का विकास नहीं हुआ, जो नौकरशाहीकरण की ओर

ले गया। इस सबके साथ ही जनता के बीच समाजवादी चेतना विकसित करने में क युनिस्ट पार्टी की विचारधारात्मक विफलताओं ने, अंतत: सोवियत संघ का पराभव होने में योग दिया।

सोवियत संघ की विफलता कोई समाजवाद की विफलता नहीं थी बल्कि समाजवाद के निर्माण में विकृतियों तथा विचारधारात्मक भटकावों ने ही उसकी विफलता का रास्ता बनाया था। सोवियत संघ में समाजवाद के निर्माण के अनुभव की ऐतिहासिक रूप से समीक्षा करते हुए यह कहा जा सकता है कि सोवियत संघ के पराभव से, आज की दुनिया में समाजवाद की प्रासंगिकता खत्म नहीं हो गयी है।

अक्टूबर क्रांति की प्रासंगिकता

अक्टूबर क्रांति ने मानवता को यह दिखाया है कि पूंजीवाद का अंत किया जा सकता है और समाजवाद की स्थापना की जा सकती है।

अक्टूबर क्रांति की मिसाल, जिसका 20वीं सदी पर जबर्दस्त असर पड़ा था, 21वीं सदी में भी पूंजीवाद के विकल्प के रास्ते को आलोकित कर रही है।

सोवियत संघ के अंत के चलते, विश्व पूंजीवाद तथा साम्राज्यवाद का बोलबाला कायम हुआ है। 21वीं सदी में नव–उदारवादी पूंजीवाद के चलते दुनिया का विभाजन और तीखा हुआ है, जिसमें एक ओर धनवानों का एक छोटा सा संस्तर है और दूसरी ओर अवाम के विशाल हिस्से हैं जो गरीबी, बेरोजगारी तथा भूख से जूझ रहे हैं।

असमानताओं में तेजी से बढ़ोतरी हुई है। दुनिया की 1 फीसद सबसे धनी आबादी की कुल संपदा 1,100 खरब डालर के बराबर है यानी विश्व आबादी के सबसे नीचे के 50 फीसद हिस्से की कुल संपदा से 65 गुना ज्यादा। दुनिया में 1 अरब 30 करोड़ से ज्यादा लोग घोर गरीबी में जी रहे हैं।

अमरीका के नेतृत्व में साम्राज्यवाद, विश्व वर्चस्व के लिए अपनी आक्रामक मुहिम जारी रखे हुए है और उसने सैन्य हस्तक्षेपों के जरिए विनाशकारी टकराव छेड़े हैं जिनकी आग इराक, सीरिया, लीबिया, यमन तथा अफगानिस्तान में आज भी जल रही है।

दुनिया भर में मजदूर वर्ग तथा मेहनतकश जनता के अन्य तबके नवउदारवादी हमले के खिलाफ, कमखर्ची के कदमों के खिलाफ और साम्राज्यवादी आधिपत्य के खिलाफ संघर्ष चला रहे हैं। उनके लिए 1917 की समाजवादी क्रांति, एक पथप्रदर्शक प्रकाश पुंज है।

तमाम क्रांतिकारी तथा प्रगतिशील ताकतों के लिए अक्टूबर की क्रांति, प्रेरणा की मशाल है। एक वर्गहीन तथा शोषणमुक्त समाज की कामना करने वाले सभी लोगों के लिए अक्टूबर क्रांति का एक ही संदेश है––समाजवाद ही भविष्य है। 0